साखी – कबीर (दोहे)

प्रश्न-अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर- मीठी वाणी बोलने से मन का अहंकार समाप्त हो जाता है। यह हमारे तन को शीतलता प्रदान करती है। सुननेवालों को भी सुख और प्रसन्नता देती है। इसलिए हमें सदा मीठी वाणी बोलनी चाहिए।

प्रश्न 2. दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है ? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- दीपक के प्रकाशपुंज के कारण अंधकार नष्ट हो जाता है। मन में ज्ञान रूपी दीपक के प्रकाश से ही मन में भ्रम, संदेह और भयरूपी अंधकार समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 3. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है पर हमें उसे क्यों नहीं देख पाते ?

उत्तर- ईश्वर कण-कण में व्याप्त है। अपनी अज्ञानता के कारण हम उसे देख नहीं पाते हैं। जिस प्रकार कस्तूरी मृग सुगंधित पदार्थ अपनी नाभी में ही रखकर जंगल में इधर-उधर ढूंढता है उसी प्रकार मनुष्य भी अपने हृदय के ईश्वर को अज्ञानता के कारण नहीं पहचान पाता।

प्रश्न 4. संसार में सुखी व्यक्ति कौन हैं और दुखी कौन ? यहाँ, 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक है ? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- सांसारिक सुखों में डूबे व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य केवल खाना - पीना और सोना ही है। वही व्यक्ति सुखी है। इसके विपरीत जो व्यक्ति ईश्वर प्राप्ति के लिए तड़पता है, वह दुखी है। यहाँ सोना शब्द 'सांसारिक सुखों में डूबे रहने का प्रतीक है तथा जागना भक्ति के मार्ग पर चलकर ज्ञान प्राप्त करने का प्रतीक हैं।

प्रश्न 5. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है ?

उत्तर- अपने स्वभाव को निर्मल रखने का सबसे अच्छा उपाय निंदा करने वाले को अपने साथ रखना। निंदक को घर में या अपने आस पास रखना चाहिए। निंदक हमारे गलत कार्यों की निंदा करेगा तो हम अपने आप को सुधारने का प्रयास करेंगे।

प्रश्न 6. ऐकै आखिर पीव का पढ़े सौ पंडित होई- इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर- जो व्यक्ति अपने परमात्मा के प्रेम का एक अक्षर पढ़ लेता है वही विद्वान है। कबीरदास के अनुसार वेदों पुराणों और उपनिषदों को पढ़ने से लाभ नहीं होता है। ईश्वर प्रेम के मार्ग को अपनाने वाला ही विद्वान है।

प्रश्न 7. कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कबीर जी द्वारा रचित साखियों की भाषा सधुक्कड़ी है। इसमें अवधी ब्रज, खड़ी बोली, पूर्वी हिंदी तथा पंजाबी के शब्दों का सुंदर प्रयोग हुआ है। अधिकतर साखियों में बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

1. बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।

भाव : इस कविता का भाव है कि जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम रुपी विरह का सर्प बस जाता है, उस पर कोई मंत्र का असर नहीं होता है। अर्थात भगवान के विरह में कोई भी जीव पागल बन जाता है।

2. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढे बन माँहि।

भावार्थ : कबीर कहते हैं कि कस्तूरी मृग कस्तूरी की सुगंध की खोज में इधर-उधर भटकता रहता है, लेकिन उसे यह नहीं पता होता कि कस्तूरी तो उसकी नाभि में ही है।

3. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।

भावार्थ : जब तक मनुष्य में अज्ञान रूपी अहंकार होता है तब तक वह ईश्वर को नहीं पा सकता है। अहंकार और ईश्वर का साथ-साथ रहना असंभव है।

4. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा पंडित भया न कोइ।

भावार्थ: कवि के अनुसार बड़े ग्रंथ, शास्त्र पढ़ने से कोई ज्ञानी नहीं होता। अर्थात ईश्वर प्राप्ति नहीं कर पाता। प्रेम से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है।

भाषा-अध्ययन

1. पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप उदाहरण के अनुसार लिखिए।

उदाहरण :-

जिवै	–	जीना
औरन	–	औरों
माँहि	–	में
देख्या	–	देखा
भुवंगम	–	भुवंग, भुजंग
नेड़ा	–	निकट
आँगणि	–	आँगन में
साबण	–	साबुन
मुवा	–	मर गए
पीव	–	प्रिय
जालौ	–	जलाया
तास	–	उस

हमारी हिंदी